Artistic Narration Dec. 2014, Vol. VI http://anubooks.com/product/artistic-narration
(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

8

आधुनिक भारत में कला का बदलता परिवेश

कु0 कामना चौहान*

हौंसला हमारा नया रंग लायेगा
अब अंधेरा भारत में रहने न पायेगा
नया ये भरता खून, नया करता है वादा
पूरा होगा भारत का, हर एक इरादा
खुशियों भरा रंग जब मन में समायेगा
अब अंधेरा भारत में रहने न पायेगा।

भारतीय कला अविरल गति से बहती हुई एक नदी के समान है जिसमें न जाने कितनी अनगिनत धारायें समाहित होकर एक नदी से महानदी के रूप में परिवर्तित होकर जीवन को आनन्दमय रस से परिपूर्ण कर देती हैं। क्योंकि कला वह कृति है जो अवधारणाओं के गर्भ में छिपी होती है जिसमें भावनाओं और विचारों का असीम क्रम बनाता रहता है और इन्हीं भावनाओं को व्यक्त करने के लिए एक तड़प एवं छटपटाहट होती है और इस अभिव्यक्ति के लिए कला प्रयोज्य सामग्री की आवश्यकता होती है। तथा जब यह सामग्री और मन के भाव एकाकार हो जाते हैं तब एक कृति को सुन्दर एक साकार रूप प्राप्त होता है।

किन्तु कालचक्र के परिवर्तन का प्रभाव अवश्य पड़ता है, इसलिए युग बदला, वक्त बदला और वक्त के साथ मनुष्य की सोच में भी बदलाव आया क्योंकि मानव स्वभाव परिवर्तनशील है। जीवन की सुन्दरता ही इस परिवर्तन अर्थात् नित नवीन प्रयोगों में है जो हम अपने जीवन में नवीनता लाने तथा भारत को विकास की ओर अग्रसर करने के लिए करते हैं और यह परिवर्तन समय और वातावरण के अनुसार बदलता रहता है और इन परिवर्तनों तथा विरोधों में सामंजस्य स्थापित करना ही जीवन की सुगति है।

स्वतंत्रता प्राप्त करने के पश्चात भारत ने विकास के अनेक सोपान चढ़े। क्षण–क्षण परिवर्तित होते संसार में जीवन के विविध क्षेत्रों में भारत ने आधुनिकता को ग्रहण करते हुये नवीन एवं विशेष प्रकार के परिवर्तन कर विकास की ओर कदम बढ़ाया है जैसे–खेती का नवीनीकरण, कम्प्यूटर तथा मोबाइल का प्रयोग रॉकेट तथा अन्य मशीनीकरणों द्वारा चाँद पर तथा अन्य ग्रहों की यात्रा सम्भवतः कर पाये हैं । इसी के साथ–साथ परिवहन, संचार, चिकित्सा, खाद्यान्न, उद्योगों के क्षेत्रों में विकास करके भारत को उन्नति के शिखर की ओर अग्रसर किया है। इसके अतिरिक्त मानव ने अपने में भी परिवर्तन लाने का सतत् प्रयास किया। उसने सर्वप्रथम अपनी भाषा में तथा रहन–सहन के तरीके को बदला। आदिमानव को उसके नित नये प्रयोगों और अपनी जीवन शैली के परिवर्तन ने ही उसे पशु से मानव और आज श्रेष्ठ मानव के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया है।

इस प्रकार जब परिवर्तन ही सृष्टि का शाश्वत सत्य है तो आधुनिक भारत के इस बदलते परिवेश में यदि कला का स्वरूप बदलता है तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। परिवर्तनों को जीवन दृष्टि के रूप में ग्रहण की प्रक्रिया ही आधुनिकता है।

**प्रवक्ता, इन्स्टीट्यूट ऑफ फाईन आर्ट,मोदीनगर*

(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

यद्यपि इसमें कोई सन्देह नहीं है कि कला का परम्परागत ज्ञान आवश्यक है, किन्तु जो कलाकार परम्परागत ज्ञान को ही लक्ष्य समझ बैठता है और हमेशा उससे बंधकर चलता है, तो यह भी निश्चित है कि वह कला के विकास में कभी समर्थ नहीं हो सकता। कला का लक्ष्य ही ''विकास या प्रगति'' है।[1]

अर्थात् कला अतीत की लकीर पर चलती हुई कोई रेखा नहीं है अपितु स्वछन्द वातावरण तथा उन्मुक्त और जीवन्त भावनाओं एवं अनगिनत संभावनाओं के बीच प्रवाहित होती ऐसी अविरल धारा है जो नित–नूतन महत्वाकांक्षाओं और प्राचीन प्रेरणाओं के साथ सामजस्य करती हुई प्रवाहमान होती है।

इस प्रकार आज आधुनिक भारत के इस बदलते परिवेश में कला में विभिन्न प्रकार के परिवर्तन हुए जो कला एवं कला जगत के विकास में सहायक सिद्ध हुए तथा कला की इस यात्रा में कला ने अब तक बहुत लम्बा सफर तय किया जिसमें भिन्न–भिन्न समय में विभिन्न प्रकार की शैलियाँ नये माध्यम एवं तकनीक जुड़ती रही है। साथ ही परिवर्तित कालचक्र के अनुभवों से कलाकारों के विचार एवं कौशल परिवर्तित हुए हैं और इन सभी परिस्थितियों के साथ समन्वय करती हुई आज कला इस मोड़ पर आ पहुँची है जहाँ कल्पना की उड़ान प्राचीन एवं परम्परागत सीमाओं को लाँघ कर सबके समक्ष कला का ऐसा स्वरूप प्रस्तुत करती है जो अद्‌भुत है, नवीन है, रोमांचक है।

आज वर्तमान में भारतीय कला ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाने में सफलता प्राप्त की है। आज आधुनिक भारत में सम्पूर्ण कला जगत के आधुनिक तत्व ही दृष्टिगोचर होते है। अब कलाकार विषय वस्तु, आकृति, संयोजन आदि में बंधकर कार्य नहीं करते, अपितु स्वछन्द सृजनशीलता में उनकी आस्था रहती है। प्रत्येक कलाकार की कार्यशैली एवं तकनीक दूसरों से पृथक एवं स्वतंत्र है। अर्थात् आज आधुनिक भारत के परिवर्तित परिवेश में कलाकार नये युग के नये सौन्दर्य बोध से अनुप्राणित हैं। रणवीर सिंह बिष्ठ के अनुसार–''मनुष्य का अन्तर्मन औद्योगिक संस्कृति से प्रभावित हुआ है और विभिन्न कलाकार इसकी उपज है तथा रेखाओं, आकारों, रंगों, दृश्यों तथा कला के सभी सम्बन्ध में पारम्परिक अवधारणाओं से इसने मुक्ति दिलायी है।''[2]

वस्तुतः आधुनिकता और समकालीनता का तात्पर्य नई दिशा खोजने तथा निजी एवं मौलिक सृजनात्मकता के माध्यम से समाज को नवीन चेतना प्रदान करते हुए उन्नति के पथ की ओर अग्रसर करना है। आज के कलाकार अपने कल्पना लोक में विश्वास रखते हुए उसके सहारे नित नूतन रूपों, आकारों का निर्माण करना चाहते हैं जो प्रकृति में भी दृष्टिगोचर न हो। इस प्रकार कला का गुण सदैव प्रयोगवादी होना है। प्रयोगवाद में प्रवाह है, प्रवाह में गति व जीवन की अनुभूति है। समसामयिक कला भी जीवन की नवीनताओं, समसामयिक सृजनात्मक जीवनचर्या, लोक व्यवहार, परस्पर सम्बन्धों फैशन आदि में जो बदलाव आया है वहीं आज कला में परिलक्षित होता है। ये नवीन प्रयोग व परिवर्तन प्रगति के ही परिचालक हैं।[3]

इस प्रकार कला जगत में आज कला के बहुआयामी स्वरूप प्रस्तुत हैं जो कला क्षेत्र में हो रहे नित नवीन प्रयोगों का परिणाम हैं जिसमें कलाकार केवल अपनी अभिव्यक्ति चित्रों के माध्यम से

(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

ही नहीं करना चाहता अपितु कैनवास से निकलकर विभिन्न माध्यमों जैसे इंस्टॉलेशन, बॉडी आर्ट, परफॉरमेंस, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया, वीडियों इंस्टॉलेशन आदि के द्वारा अभिव्यक्त करना चाहता है। अतः कलाकार यह मानता है कि सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक परिवर्तन से प्रभावित वैचारिकता जहाँ कला में अन्तनिर्हित मूल्यों को प्रभावित करती है वहीं भौतिकता के विकास एवं यांत्रिकता की गति के प्रभाव से उसका बाह्य रूप भी परिवर्तित हुआ। कला सृजन की आन्तरिक गत्यात्मकता ठहरे बगैर निरन्तर वैज्ञानिक खोजों की भांति कलाकार के हाथों एक अनूठे दृश्य संसार के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध रही है।[4]

इस प्रकार कला के क्षेत्र में वैचारिक क्रान्ति आयी है जिसने नई पीढ़ी के कलाकारों को सचेत किया और कला के नये आयाम प्रस्तुत किए हैं। अतः कला के इन नवीन आयामों में से ''इंस्टॉलेशन'' अर्थात् संस्थापन कला भी एक रूप है जिसका आज कला जगत में विशिष्ट स्थान है। नई सहस्त्राब्दी के प्रयोगधर्मी कला के वातावरण में कालाकार ''इंस्टॉलेशन आर्ट'' के क्षेत्र में सबसे अधिक काम कर रहे हैं।

वास्तव में संस्थापन कला समग्र कला है इंस्टॉलेशन शब्द का प्रयोग पश्चिम में साठ के दशक से आरम्भ होता है । यूरोप में इस विधा में सर्वाधिक प्रयोग हुए। इसका प्रभाव अन्य देशों पर भी पड़ा। संस्थापन कला का प्रारम्भ मार्शल की ''फाउन्टेन'' नामक कृति से माना जाता है किन्तु भारत में यह उतना प्राचीन नहीं है जितना पश्चिम में। किन्तु धीरे–धीरे इस विधा को जाना गया और अन्य कलाकारों ने भी इस पर कार्य किया। 20वीं सदी के अन्तिम पड़ाव तक आते कला में अन्तर्राष्ट्रीय रूप में ''इंस्टॉलेशन आर्ट'' के नये स्वरूप की अभिव्यक्ति समाने आयी क्योंकि आज समाज में जो कुछ चल रहा है या जो कुछ भी घटित हो रहा है उससे उत्पन्न हर्ष, उल्लास, विषाद, द्वन्द और विभिन्न समस्याओं को ''इंस्टॉलेशन आर्ट'' द्वारा अभिव्यक्त किया जा रहा है। इसमें फोटोग्राफी, प्रिंटमेकिंग, मूर्तिशिल्प, पेंटिग, रेखांकन, बॉडी आर्ट, हैप्पनिंग, संगीत, कम्प्यूटर इन सभी वस्तुओं का इस्तेमाल होता है यहाँ तक की कलाकार कभी–कभी अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए स्वयं को भी कला रूप में प्रदर्शित करता है। अतः यह सत्य है कि यथार्थ जीवन प्रक्रियाओं से कला निरन्तर पोषित होती रही है और वह समकालीन और जनसरोकारों से जुड़ी कला बन जाती है। अतः ऐसी भावनाओं से निर्मित कलाकृतियाँ समाज की चेतना का अभिन्न अंग बन जाती हैं और वह समय के साथ–साथ आने वाली नई पीढ़ी के कलाकारों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बन जाती हैं।

इंस्टॉलेशन के कलाकारों में विवान सुन्दरम् का नाम विख्यात है। वह इस क्षेत्र में वरिष्ठ कलाकार के रूप में प्रतिष्ठित है। इन्होंने ही इंस्टॉलेशन को सबसे अधिक गम्भीरता से लिया तथा आज के परिवेश में संस्थापन कला को और अधिक नवीन स्वरूप में प्रस्तुत करने के लिए अनेक कलाकार इस ओर प्रयासरत है तथा उन्होंने अथक परिश्रम व अपने नवीन प्रयोगों से इसे एक नई दिशा प्रदान की।

कला के इस सफर में ''अनीश कपूर'' ने एक सफल यात्रा तय की और आज वह एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार के रूप में कला जगत में प्रसिद्ध है।

(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

इनका जन्म 12 मार्च सन् 1954 को बम्बई में हुआ इनके पिता हिन्दू तथा माता यहूदी धर्म की थी। अनीश कपूर प्रारम्भ में अध्ययन के लिए उत्तराखण्ड देहरादून के प्रतिष्ठित बोर्डिंग ''दा दून स्कूल'' में गये किन्तु उन्हें वहाँ का समय अच्छा नहीं लगा। इसके पश्चात् वह अपने भाई के साथ इजराइल गये जहाँ उन्होंने इलैक्ट्रॉनिक इंजीनियर की शिक्षा ली किन्तु इनकी वास्तविक रूचि कला के क्षेत्र में थी । अतः उन्होंने एक कलाकार बनने का निश्चय किया और 1973 में Hornsey College of Art and Chelsea School of Art and Design में प्रवेश लिया जहाँ उन्होंने कला के गुणों को सीखा। इसके पश्चात् 1980 में अनीश कपूर ज्यामितिय और बायोमॉरफिक मूर्तिशिल्प के लिए जाने गये। उन्होंने अपने मूर्ति शिल्पों को बहुत साधारण रूप में प्रस्तुत किया। उनकी प्रथम प्रदर्शनी 1978 में **Hayward Gallery London** में प्रदर्शित हुई। इसके पश्चात् वह इस पथ पर अग्रसर होते गये और उन्नति करते रहे।

इसके पश्चात् उन्होंने कला के कार्य में नवीन प्रयोग करते हुए 1995 में उन्होंने तीव्र परावर्तक जंगरोधी स्टील को अपने कार्य करने का माध्यम बनाया, उनका यह प्रयोग कला जगत में एक नवीन अध्याय के रूप में प्रस्तुत हुआ यह कार्य देखने में शीशे में प्रतिबिम्ब को देखना जैसा प्रतीत होता है इसमें देखने वाले दर्शक और आस–पास का वातावरण शीशे में प्रदर्शित होता है जो बहुत अद्भुत दिखाई देता है।

इन्होंने 19 सितम्बर से 27 अक्टूबर 2006 को न्यूयॉर्क में एक विशाल काय ''स्काईमिरर'' का इंस्टॉलेशन किया जो बहुत प्रसिद्ध है। इसके आतिरिक्त 2010 में अनीश कपूर के कई सकल्पचर Kensington Garden में प्रदर्शित हुए।

इन्होंने लन्दन ऑलम्पिक 2012 के लिए एक ऑरबिट (Orbit) नामक प्रोजेक्ट तैयार किया। यह ऑलम्पिक पार्क के लिए स्थायी रूप से निर्मित एक विशालकाय टावर है इसका निर्माण कार्य नवम्बर 2010 से प्रारम्भ होकर मई 2012 तक सम्पूर्ण हुआ।

(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त अनीश कपूर ने अपने परिश्रम से नित नवीन प्रयोग करते हुए उन्होंने संस्थापन कला को एक नया स्वरूप पदान किया।

संस्थापन कला को अपनी कला विधा के रूप में अपनाने वाले समकालीन कलाकारों में एक अन्य प्रतिष्ठित नाम है ''भारती खेर'' का जिन्होंने संस्थापन कला के लिए अपना अतुलनीय सहयोग दिया। भारती खेर आज एक प्रसिद्ध समकलीन कलाकार के रूप में जानी जाती हैं। इनका जन्म 1969 में हुआ इन्होंने कई क्षेत्रों में कार्य किया जैसे–मूर्तिकला, चित्रकला एवं संस्थापन कला। इन्होंने कला के क्षेत्र में एक नवीन प्रयोग किया इन्होंने भारतीय नारी द्वारा लगाई जाने वाली परम्परागत

(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

बिन्दी को अपनी कला का माध्यम बनाया इन्होंने स्पर्म के आकार और बिन्दी को अपने आर्ट वर्क में प्रयोग किया और इन बिन्दियों के प्रयोग ने भारती खेर को कला जगत में एक नई पहचान दी इन्होंने कई प्रदर्शिनियों में भाग लिया तथा निरन्तर प्रयोग करते हुए कला जगत को एक नया आयाम दिया।

इनके अतिरिक्त इन्दर सलीम, रंजनी शितर, एन0 एस0 हर्षा आदि कई कलाकारों ने संस्थापन कला को एक नई दिशा प्रदान की । इनमें रंजनी अपने वृहद् स्तर पर संकल्पचर इंस्टॉलेशन करने के लिए विख्यात हैं उन्होंने अपने कार्य में आधुनिक तथा परम्परागत तत्वों का समावेश किया।

इसके अतिरिक्त इन्दर सलीम एक अतिवादी तथा मौलिक परफॉमेन्स कलाकार के रूप में जाने जाते हैं। इनका उद्देश्य अपनी कला के द्वारा भारतीय समकालीन राजनैतिक मुद्दों पर भारतीय जनता को जागरूक करना या उत्तेजित करना है। इन्दर सलीम ने भावनाओं को व्यक्त करने के लिए अपनी आस–पास के वातावरण में उपस्थित वस्तुओं के अतिरिक्त उन्होंने स्वयं अपने शरीर को ही एक माध्यम के रूप में प्रयोग किया।

(p) ISSN: 0976-7444, (e) ISSN: 2395-7247

इस प्रकार निरन्तर परिवर्तित होते परिवेश में अनेक कलाकारों ने ''इंस्टॉलेशन आर्ट'' को एक नया स्वरूप प्रदान किया। क्योंकि प्रारम्भ में संस्थापन कला में पुराने या प्रयोग किये हुए उपादानों को एक नये अर्थ में प्रस्तुत किया जाता था किन्तु आज इसमें कई वस्तुओं के साथ दैनिक जीवन में प्रयुक्तहोने वाली वस्तुओं का संगम है। यहीं नहीं उन्हें देखने वाले कला प्रेमी भी उसमें हिस्सेदारी करते हैं। कलाकारों ने इस विधा में स्वयं को एक नवीन रूप में प्रस्तुत किया है जिसमें परम्परावादी दृष्टिकोण का स्थान प्रयोगवादी दृष्टिकोण ने लिया है तथा कलाकारों ने कुछ नवीन करने का प्रयास किया है।

इस प्रकार आधुनिक कला जगत में संस्थापन कला ने अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है आधुनिक कलाकार प्रयोगधर्मी हैं क्योंकि औद्योगिक और वैज्ञानिक सभ्यता के तीव्र विकास ने मनुष्य के मन और मस्तिष्क को अत्याधिक प्रभावित किया है। नये बिम्बों तथा नये मुहावरों और साहसिक प्रयोगों ने सारे कला क्षितिज को ही बदल डाला है कला के नये मानदण्ड नई परिभाषाएं चारों ओर ऊभर रहे नये वादों ने आकार अभिव्यक्ति के माध्यमों को नई भाषा प्रदान की है।[5] कलाकार चाहे किसी भी माध्यम में कार्य करें सस्थापन कला का आकर्षण उन्हें अपनी ओर खींच ही लेता है। अतः कला चाहे किसी भी काल में या किसी भी रूप तथा माध्यम में निर्मित हो कला सदैव जीवन को अलंकृत करती रही है। इस प्रकार प्रत्येक राष्ट्र की कला अपने परिवेश में विकसित होती आज का प्रयोगधर्मी कलाकार रचनात्मकता के लिए जागरूक एवं चिन्तित दिखाई पड़ता है। अतः आधुनिक भारत में कला के परिवेश को बदलने के साथ–साथ अपने भावी जगत के सपने को साकार रूप देने के लिए कलाकार निरन्तर प्रयासरत हैं। इसलिए कहा है किः–

''जागो –जागो अब सोने का समय नहीं है,
समय के साथ–साथ चलो अब खोने का समय नहीं है।''

सन्दर्भ सूची

1. शुक्ल रामचन्द्र, कला का दर्शन
2. कला त्रैमासिक अंक जू0 जु0 अ0–1983
3. चतुर्वेदी, डॉ0 ममता, समकालीन भारतीय कला, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ आकदमी, जयपुर, 2008
4. समकालीन कला : अवधेश अमन : समकालीन कला के नये अर्थ अंक 17, मई 1996
5. त्यौहार राम मनोहर सिन्हा–समकालीन कला के आयाम, समकालीन कला